MAHARAJA SURAJMAL BRIJ UNIVERSITY, BHARATPUR (RAJ.)

SYLLABUS FOR

TWO YEAR POSTGRADUATE PROGRAMME IN ARTS AS PER THE NEP 2020

M.A. SANSKRIT, SEMESTER - I

WITH EFFECTIVE FROM

SESSION 2025-26 & ONWARDS

प्रभारी अकादमिक प्रथम

विषय–सूची (Content)

क्र.सं.	विषय / प्रश्नपत्र नाम	प्रकार	कोड	पृ.सं.
1.	सामान्य निर्देश			02–03
2.	पाठ्यक्रम विवरण			04
3.	पाठ्यक्रम स्वरूप			05
4.	प्रथम अनिवार्य प्रश्नपत्र 'वैदिक सूक्त'	CC	SAN-1011-T	06–07
5.	द्वितीय अनिवार्य प्रश्नपत्र 'साहित्यशास्त्र'	CC	SAN-1012-T	08–10
6.	तृतीय अनिवार्य प्रश्नपत्र 'भारतीयदर्शन'	CC	SAN-1013-T	11–13
7.	चतुर्थ वैकल्पिक प्रश्नपत्र 'नीति एवं कथा साहित्य'	CE	SAN-1014-T	14-16
8.	चतुर्थ वैकल्पिक प्रश्नपत्र 'गीति एवं स्तोत्रकाव्य'	CE	SAN-1015-T	17-19
9.	चतुर्थ वैकल्पिक प्रश्नपत्र 'ब्राह्मण एवं आरण्यक साहित्य'	CE	SAN-1016-T	20-22
10.	पंचम वैकल्पिक प्रश्नपत्र 'वीरकाव्य एवं पुराण'	CE	SAN-1017-T	23-25
11.	पंचम वैकल्पिक प्रश्नपत्र 'पाण्डुलिपि एवं अभिलेख'	CE	SAN-1018-T	26-28
12.	पंचम वैकल्पिक प्रश्नपत्र 'संस्कृत साहित्य का इतिहास'	CE	SAN-1019-T	29-32
13.	षष्ठ अनिवार्य प्रश्नपत्र 'संस्कृत रचना एवं अनुवाद'	SEC	SEC-1011-T	33-35

2. परीक्षार्थियों हेतु परीक्षा सम्बन्धी सामान्य निर्देश

- परीक्षा का संचालन विश्वविद्यालय द्वारा समय–समय पर जारी अधिसूचनाओं के अनुसार किया जाएगा।
- स्नातकोत्तर संस्कृत की प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा में परीक्षा / मूल्यांकन हेतु 25–25 अंक के 04 क्रेडिट होंगे।
- सेमेस्टर ग्रेड प्वाइंट एवरेज (SGPA) में सम्मिलित पाठ्यक्रम के दो घटक होंगे–

  (क) सतत आंतरिक मूल्यांकन (Continuous Assessment – CA) – कुल पूर्णांक के 20 प्रतिशत भारांक के बराबर होगा, विद्यार्थी को उत्तीर्ण होने के लिए इसमें 40 प्रतिशत अंक अर्जित करना आवश्यक है। सतत आंतरिक मूल्यांकन सेमेस्टर के दौरान आयोजित आंतरिक परीक्षाओं (मिड–टर्म टेस्ट एवं आंतरिक मूल्यांकन) पर आधारित होगा। इसके अतिरिक्त कक्षा–उपस्थिति, कक्षा–सहभागिता, प्रस्तुतीकरण (Presentation), गृहकार्य / परियोजना कार्य आदि होंगे। 20 प्रतिशत भारांक अर्थात् सतत आंतरिक मूल्यांकन 20 अंक का होगा जिसका निम्नानुसार विभाजन होगा –

प्रभारी अकादमिक प्रथम

सतत आंतरिक मूल्यांकन भारांक				अर्द्धसत्रांत परीक्षा भारांक	कुल
उपस्थिति	असाइनमेंट	मिड–टर्म एवं अन्य गतिविधियाँ	कुल	सैद्धान्तिक परीक्षा	04 क्रेडिट
05	05	10	20	80	100
न्यूनतम उत्तीर्णांक =			08	32	40

- ✓ कुल अध्यापित कक्षाओं के 75 प्रतिशत उपस्थिति प्राप्त करने पर 02 अंक, 76 प्रतिशत से 83 प्रतिशत उपस्थिति होने पर 03 अंक, 84 प्रतिशत से 91 प्रतिशत उपस्थिति होने पर 04 अंक तथा 92 प्रतिशत से 100 प्रतिशत उपस्थिति होने पर विद्यार्थी को 05 अंक प्रदान किये जायेंगे।
- ✓ कुल अध्यापित कक्षाओं के 75 प्रतिशत से कम उपस्थिति होने पर विद्यार्थी को नियमित छात्र के रूप में परीक्षा आवेदन पत्र भरने की अनुमति नहीं होगी।

(ख) **अर्द्धसत्रांत परीक्षा** (End of Semester Examination – EoSE) – सेमेस्टर का अध्ययन पूर्ण होने पर कुल पूर्णांक के 80 प्रतिशत भारांक की एक सैद्धान्तिक परीक्षा होगी, उत्तीर्ण होने के लिए विद्यार्थी को इसमें भी अलग से 40 प्रतिशत अंक अर्जित करना आवश्यक है।

- प्रत्येक पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र की अर्द्धसत्रांत परीक्षा पूर्णांकों के 80 प्रतिशत अंक भार की होगी। परीक्षा की अवधि 3 घंटे की होगी।
- स्नातकोत्तर संस्कृत के प्रथम सेमेस्टर में विषय केन्द्रित कुल पाँच प्रश्नपत्र एवं कौशलोन्नायक 01 प्रश्नपत्र सहित कुल 06 पेपर होंगे।
- प्रत्येक प्रश्नपत्र में 'अ' एवं 'ब' दो भाग होंगे। 'अ' भाग में पाठ्यक्रम की सभी इकाइयों से पूछा जाने वाला लघूत्तरात्मक प्रथम प्रश्न अनिवार्यप्रश्न के रूप में होगा। इसमें बिना किसी आन्तरिक विकल्प के 02–02 अंक के कुल 08 लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
- प्रत्येक प्रश्नपत्र के 'ब' भाग में सभी इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ एक–एक प्रश्न पूछते हुए 16–16 अंक के 04 प्रश्न होंगे। 'ब' भाग के प्रत्येक प्रश्न में दो/तीन उपप्रश्न होंगे।
- प्रश्न–पत्र में श्लोक/गद्य/सूत्र संस्कृत भाषा में पूछे जा सकेंगे तथा शेष प्रश्नपत्र हिन्दी भाषा में होगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि वह हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक द्वारा किसी प्रश्न–विशेष के लिए भाषा का निर्देश किया गया है तो उस प्रश्न का उत्तर निर्दिष्ट भाषा में ही देना अनिवार्य है।
- संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
- प्रश्नपत्र में संस्कृत भाषा के माध्यम से उत्तर देने हेतु 10 प्रतिशत अंक निर्धारित हैं, लेकिन जिस प्रश्नपत्र में संस्कृतानुवाद या संस्कृत भाषा में निबन्ध पूछे गए हैं, वहाँ संस्कृत भाषा में उत्तर देने हेतु 10 प्रतिशत अंक वाली बाध्यता नहीं होगी।

प्रभारी अकादमिक प्रथम

पाठ्यक्रम विवरण (Course Detail) – पाठ्यक्रम को तीन भागों में बांटा गया है। प्रथम भाग में 03 विषय केन्द्रित मुख्य एवं अनिवार्य प्रश्नपत्र (Centric Core Paper), द्वितीय भाग में 02 विषय केन्द्रित ऐच्छिक/वैकल्पिक प्रश्नपत्र (Elective Core Paper) तथा तृतीय भाग में 01 कौशलसंवर्धन पाठ्यक्रम (Skill Enhancement Course) रखा गया है। सभी पाठ्यक्रमों/प्रश्नपत्रों का शीर्षक, कोड, क्रेडिट आदि विवरण निम्नानुसार होंगे–

(क) विषय केन्द्रित मुख्य एवं अनिवार्य प्रश्नपत्र (Centric Core Paper)

क्र.	प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्र का नाम	कोड	विशेष विवरण
1.	Centric Core Paper-I	वैदिक सूक्त	SAN-1011-T	अनिवार्य प्रश्नपत्र
2.	Centric Core Paper-II	साहित्यशास्त्र	SAN-1012-T	अनिवार्य प्रश्नपत्र
3.	Centric Core Paper-III	भारतीय दर्शन	SAN-1013-T	अनिवार्य प्रश्नपत्र

(ख) विषय केन्द्रित ऐच्छिक/वैकल्पिक प्रश्नपत्र (Elective Core Paper) – निम्नलिखित में से चयन करें –

क्र.	प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्र का नाम	कोड	विशेष विवरण
1.	Centric Core Elective Paper-IV	नीति एवं कथा साहित्य	SAN-1014-T	इन तीनों में से कोई एक प्रश्नपत्र चुनें।
		गीति एवं स्तोत्रकाव्य	SAN-1015-T	
		ब्राह्मण एवं आरण्यक साहित्य	SAN-1016-T	
2.	Centric Core Elective Paper-V	वीरकाव्य एवं पुराण	SAN-1017-T	इन तीनों में से कोई एक प्रश्नपत्र चुनें।
		पाण्डुलिपि एवं अभिलेख	SAN-1018-T	
		संस्कृत साहित्य का इतिहास	SAN-1019-T	

(ग) कौशलसंवर्धन पाठ्यक्रम (Skill Enhancement Course)

क्र.	प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्र का नाम	कोड	विशेष विवरण
1.	Skill Enhancement Course (SEC) Paper-VI	संस्कृत रचना एवं अनुवाद	SEC-1011T	अनिवार्य प्रश्नपत्र

प्रभारी अकादमिक प्रथम

(Only for Regular Students)

द्विवर्षीय स्नातकोत्तर, (संस्कृत) सेमेस्टर पाठ्यक्रम की रूपरेखा (सत्र 2025–26 से लागू)

DISTRIBUTION OF MARKS

Exam Time Duration : 03 Hours Credits : 04 Max. Marks : 100 Min. Marks : 40

Marks Weightage of Continuous Assessment				External Assessment Weightage	Total
Attendance*	Assignment	Mid-Term Exam	Total	End of semester exam	04 Credits
05	05	10	20	80	100
Minimum passing marks (40%)			08	32	40

* - Attendance Marks Range - 92 to 100% = 05 Marks, 84 to 91% = 04 Marks, 76 to 83% = 03 Marks & on gaining 75% = 02 Marks. Below 75% = 0 Mark & Not eligible to apply exam form as regular student.

M.A. Previous (Sanskrit) Semester - I									
Course Discipline	Course title	Course Type	Course Code	Hours/week			Credits	Max. Marks	Min. Marks
				L	T	P			
Centric Core Paper-I	वैदिक सूक्त	Major	SAN-10101-T	4	0	0	4	100	40
Centric Core Paper-II	साहित्यशास्त्र	Major	SAN-10102-T	4	0	0	4	100	40
Centric Core Paper-III	भारतीय दर्शन	Major	SAN-10103-T	4	0	0	4	100	40
Centric Core Elective Paper-IV	नीति एवं कथा साहित्य	Major	SAN-10104-T	4	0	0	4	100	40
	गीति एवं स्तोत्रकाव्य		SAN-10105-T						
	ब्राह्मण एवं आरण्यक साहित्य		SAN-10106-T						
Centric Core Elective Paper-V	वीरकाव्य एवं पुराण	Major	SAN-10107-T	4	0	0	4	100	40
	पाण्डुलिपि एवं अभिलेख		SAN-10108-T						
	संस्कृत साहित्य का इतिहास		SAN-10109-T						
Skill Enhancement Course (SEC)	संस्कृत रचना एवं अनुवाद	Major/ Minor	SEC-10110-T	4	0	0	4	100	40
Total Semester Wise Credits				24	0	0	24	600	240

प्रभारी अकादमिक प्रथम

स्नातकोत्तर–संस्कृत, प्रथम सेमेस्टर

Centric Core Paper-I वैदिक सूक्त

Course Code - SAN-10101-T

अधिगम–प्रतिफल

- विद्यार्थी ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद के प्रमुख सूक्तों की वस्तु–वर्णना, उद्देश्य और विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी सूर्य, विष्णु, उषा, पर्जन्य आदि प्रमुख देवताओं से संबंधित सूक्तों की विषयवस्तु को पहचान सकेंगे।
- विद्यार्थी सूक्तों में प्रयुक्त वैदिक संस्कृत के शब्द, धातु, छन्द और अलंकार की पहचान कर सकेंगे।
- विद्यार्थी विभिन्न सूक्तों के दार्शनिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक संदेशों के साथ संबंधित इतिहास के विषय में समझ पायेंगे।

कौशल प्रशिक्षण

- विद्यार्थी वैदिक सूक्तों का शुद्ध उच्चारण, स्वर और स्वरों के दीर्घ–ह्रस्व भेद को उत्तम रीति से पढ़ सकेंगे।
- विद्यार्थी सूक्तों का अन्वय, पदच्छेद, सरल भावार्थ और विस्तृत व्याख्या करने में सक्षम हो सकेंगे।
- विद्यार्थी सूक्तों के आचरणिक व जीवनमूल्यगत उपयोग को आधुनिक जीवन में अपना सकेंगे।
- विद्यार्थी सूक्तों में निहित प्राकृतिक, सामाजिक और वैज्ञानिक अवधारणाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- सूक्तों के संरचना, भाषा, दर्शन, विज्ञान आदि पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- वैदिक साहित्य को अन्य धार्मिक या दार्शनिक ग्रंथों के साथ तुलना कर सकेंगे।

पाठ्यक्रमगत अपेक्षा

- विद्यार्थियों में प्रकृति–सामंजस्य, पर्यावरण–संरक्षण, ऋतु–चक्र, कर्तव्य–परायणता जैसे वैदिकमूल्यों की समझ बढेगी।
- विद्यार्थियों में भारतीय ज्ञान–परम्परा और सांस्कृतिक विरासत के प्रति गौरव–भाव उत्पन्न होगा।
- सहयोग, अहिंसा, समरसता, सत्य–निष्ठा, तप, संयम जैसे नैतिक मूल्यों का अभ्यास बढ़ेगा।

पाठ्यक्रम की प्रकृति	: मेजर	**प्रश्नपत्र प्रकृति**	: सैद्धान्तिक	**पाठ्यक्रम क्रेडिट**	: 04
शिक्षण अवधि	: 90 दिवस	**प्रति सप्ताह कालांश**	: 04	**पूर्णांक**	: 100

नोट :– पूर्णांक का 20 प्रतिशत अंकभार मध्यावधि आन्तरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित है।

प्रभारी अकादमिक प्रथम

इकाई अनुसार पाठ्यक्रम

इकाई	पाठ्यांश	भाग	अंक–विभाजन	अंक	
1. ऋग्वैदिक सूक्त	सूर्य (1.125), विष्णु (1.154), उषस् (3.61), पर्जन्य (5.83), अक्ष (10.34), ज्ञान (10.71), पुरुष (10.90), वाक् (10.125), नासदीय (10.129)	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 मंत्रों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
2. संवादसूक्त	विश्वामित्र–नदी (3.33), यम–यमी (10.10), पुरुरवा–उर्वशी (10.95), सरमा–पणि (10.108)	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 मंत्रों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
3. अथर्ववेदीय सूक्त	राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29), काल (10.53), पृथिवी (12.1 प्रथम 18 मंत्र)	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 मंत्रों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
4. यजुर्वेदीय सूक्त एवं वैदिक साहित्य का इतिहास	• शिवसंकल्प सूक्त (अध्याय 34 प्रथम 6 मंत्र), प्रजापति (अध्याय 23 प्रथम 5 मंत्र) • वेदों का काल निर्धारण, संहिता साहित्य।	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 मंत्रों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
भाग 'अ' में 01 प्रश्न (02–02 अंक के 08 लघूत्तरात्मक प्रश्न) अंक 16। भाग 'ब' में 64 अंक के 04 प्रश्न होंगे।				कुल = 80	

पाठ्यक्रम के अधिगम हेतु सहायक पुस्तकें

क्र.	पुस्तक	व्याख्याकार	प्रकाशन	ISBN
1.	ऋक् सूक्त संग्रह	शास्त्री हरिदत्त	साहित्य भण्डार प्रकाशन, मेरठ	- - -
2.	वैदिक सूक्त संकलन	डॉ. देवेन्द्र नाथ पाण्डेय	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर	9789383452804
3.	वैदिक सूक्त संग्रह	सानुवाद	गीता प्रेस गोरखपुर	- - -
4.	ऋक् सूक्त संग्रह	डॉ. देवेन्द्र नाथ पाण्डेय	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर	9789383452811
5.	वैदिक साहित्य एवं संस्कृति	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	- - -
6.	वैदिक साहित्य का इतिहास	जयदेव वेदालंकार	न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली	9788183153171
7.	वैदिक साहित्य का इतिहास	प्रो. पारसनाथ द्विवेदी	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी	9789381484258

Web Resources - ऋक् सूक्त संग्रह – https://epustakalay.com/book/55071-rik-sukta-sangrah-by-peterson/

प्रभारी अकादमिक प्रथम

वैदिक साहित्य का इतिहास – https://ia801409.us.archive.org/8/items/in.ernet.dli.2015.477163/2015.477163.Vaidik-Saahitya_text.pdf , https://drsohanrajtater.com/admin/floorplan_images/Copy%20of%20Vaidik%20Sanskrit%20Sahitya%20full%20book.pdf

स्नातकोत्तर–संस्कृत, प्रथम सेमेस्टर

Centric Core Paper-II साहित्यशास्त्र

Course Code - SAN-CC-7102 010102-T

अधिगम–प्रतिफल

- विद्यार्थी साहित्यदर्पण के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं षष्ठ परिच्छेदों की विषय–वस्तु और क्रमबद्धता को समझ सकेंगे।
- विभिन्न काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों का व्यापक ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- भरतमुनि, भामह, दंडी, आनंदवर्धन, मम्मटादि काव्यशास्त्रियों के विचारों के साथ साहित्यदर्पण के योगदान को समझ पाएंगे।
- काव्य के लक्षण, अवयव, उद्देश्य तथा विभिन्न काव्यभेदों का शास्त्रीय स्वरूप समझ पाएंगे।
- भारतीय काव्यशास्त्र के प्रति गहन, तार्किक और सौंदर्यपरक दृष्टि विकसित होगी।
- भारतीय काव्यपरम्परा के मूलभूत सिद्धांतों के प्रति सम्मान, संवेदनशीलता तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा।
- नाट्य की उत्पत्ति–कथा, ब्रह्मा द्वारा नाट्यवेद की रचना तथा देवताओं की भूमिका को समझ सकेंगे।
- चतुर्वेदों के साररूप नाट्य के पाठ्य, गीत, अभिनय, रसादि तत्वों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- नाट्य के उद्देश्य, उसकी सामाजिक उपयोगिता, और मानव–जीवन के दुःख–निवारण में उसकी भूमिका को समझ पाएंगे।
- विद्यार्थी नाट्यमण्डप के प्रकार (विकृष्ट, त्र्यस्र, चतुरस्र) तथा उनकी विशिष्टताओं को समझ सकेंगे।
- मण्डप की माप–रचना, दिशा–निर्धारण, अनुपात और वास्तु–सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- मंच, रंगपीठ, नेपथ्य, कुटप, स्तंभ, प्रवेश–द्वार आदि संरचनात्मक अवयवों को व्यवस्थित रूप से समझ सकेंगे।
- प्राचीन भारतीय नाट्य–वास्तुशिल्प और तकनीकी संरचना की व्यावहारिक अवधारणाएँ जान सकेंगे।

कौशल प्रशिक्षण

- काव्य के रस–विश्लेषण करने में दक्षता विकसित होगी।
- प्राचीन और आधुनिक काव्य में अलंकार–पहचान, व्याख्या और वर्गीकरण करने का कौशल विकसित होगा।

प्रभारी अकादमिक प्रथम

- काव्य की भाषा, शैली, ध्वनि, रीति आदि का समालोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- पाठालोचन और शास्त्रीय ग्रंथों की व्याख्यात्मक पद्धति को व्यवहार में ला सकेंगे।
- विद्यार्थी नाट्य के दार्शनिक, सांस्कृतिक व सामाजिक संदर्भों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- नाट्य को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के संदर्भ में व्याख्यायित करने की क्षमता विकसित होगी।
- नाट्य की उत्पत्ति से जुड़े तत्वों के आधार पर प्रारंभिक नाट्यरचना के सिद्धांतों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भारतीय नाट्यकला के मूलभूत सिद्धांतों के प्रति सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक दृष्टि विकसित होगी।
- नाट्य को शास्त्रीय कला के रूप में समझने हेतु गंभीरता, संवेदनशीलता और सम्मिलित दृष्टिकोण बनेगा।
- विद्यार्थी वैज्ञानिक एवं वास्तुशास्त्रीय आधारों पर नाट्यमण्डप की योजना और विश्लेषण कर सकेंगे।
- मंच की संरचना को देखकर उसके नाट्यप्रयोगों की उपयुक्तता का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- नाट्यमण्डप और उसके अवयवों का आधुनिक रंगमंच से तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी नाट्य की उत्पत्ति, उद्देश्य और सामाजिक–सांस्कृतिक महत्ता का वैज्ञानिक एवं शास्त्रीय बोध प्राप्त करेंगे।
- नाट्यमण्डप की रचना, संरचना और तकनीकी आवश्यकताओं का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों को आधुनिक रंगमंच में अनुप्रयोग करने की क्षमता विकसित होगी।

पाठ्यक्रमगत अपेक्षा

- विद्यार्थी साहित्यदर्पण की सिद्धांत–व्यवस्थाओं का उपयोग कर अनुसंधान–आधारित लेखन को समझेंगे।
- काव्यशास्त्र के पारंपरिक सिद्धांतों का आधुनिक साहित्य–चिंतन के साथ तुलनात्मक अध्ययन कर पाएंगे।
- नाट्य, काव्य, निबंध, उपन्यास सहित विभिन्न साहित्यिक विधाओं की शास्त्रीय कसौटियों पर जाँच करने में समर्थ होंगे।
- भारतीय सौंदर्यशास्त्र के सिद्धांतों का उपयोग कर रचनात्मक लेखन में सौंदर्य–वृद्धि कर सकेंगे।
- छात्रों में प्राचीन भारतीय नाट्य–वास्तु के प्रति समग्र, तकनीकी और सौंदर्यपरक दृष्टि विकसित होगी।
- विद्यार्थियों में प्राचीन रंगमंच और आधुनिक थिएटर तकनीक की समन्वित समझ बनेगी।

पाठ्यक्रम की प्रकृति	**: मेजर**	**प्रश्नपत्र प्रकृति**	**: सैद्धान्तिक**	**पाठ्यक्रम क्रेडिट**	**: 04**
प्रशिक्षण अवधि	**: 90 दिवस**	**प्रति सप्ताह कालांश**	**: 04**	**पूर्णांक**	**: 100**

नोट :– पूर्णांक का 20 प्रतिशत अंकभार मध्यावधि आन्तरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित है।

प्रभारी अकादमिक प्रदेश

इकाई अनुसार पाठ्यक्रम

इकाई	पाठ्यांश	भाग	अंक–विभाजन	अंक	
1. साहित्यदर्पण	प्रथम, द्वितीय परिच्छेद सम्पूर्ण एवं तृतीय परिच्छेद (प्रथम 28 कारिका तक)	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 कारिकाओं में से 02 की व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
2. साहित्यदर्पण	षष्ठ परिच्छेद (सम्पूर्ण)	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 कारिकाओं में से 02 की व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
3. नाट्यशास्त्र	प्रथम अध्याय	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 पद्यों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
4. नाट्यशास्त्र	द्वितीय अध्याय	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 पद्यों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
भाग 'अ' में 01 प्रश्न (02–02 अंक के 08 लघूत्तरात्मक उपप्रश्न) अंक 16। भाग 'ब' में 64 अंक के 04 प्रश्न होंगे।				कुल =	80

पाठ्यक्रम के अधिगम हेतु सहायक पुस्तकें

क्र.	पुस्तक	व्याख्याकार	प्रकाशन	ISBN
1.	साहित्यदर्पणम्	शालिग्राम शास्त्री	भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली	9788180902055
2.	साहित्यदर्पणम्	डॉ. निरूपणा विद्यालंकार	साहित्य भण्डार प्रकाशन, मेरठ	– – –
3.	नाट्यशास्त्रम्	डॉ. ब्रजमोहन चतुर्वेदी	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी	– – –
4.	नाट्यशास्त्रम्	डॉ. पारसनाथ द्विवेदी	सम्पूर्णानंद संस्कृत वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी	– – –

प्रभारी अकादमिक प्रथम

Web Resources - साहित्यदर्पण – https://share.google/4hxgdFt0vtBe0vn35

नाट्यशास्त्र – https://share.google/CQCeZpY73NSaLBnC2

स्नातकोत्तर–संस्कृत, प्रथम सेमेस्टर

Centric Core Paper-III भारतीय दर्शन

Course Code - SAN-CC-1103 10103-T

अधिगम–प्रतिफल

- सांख्यकारिका के अध्ययन से विद्यार्थी सांख्य दर्शन की मूल अवधारणाएँ– पुरुष, प्रकृति, महत्, अहंकार, तन्मात्राएँ, विविध इन्द्रियों आदि का गहन ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। त्रिगुणसिद्धान्त और कारण–कार्य–विवेक की तर्कसंगत समझ के साथ मुक्तिसाधन में सांख्य के तत्त्वज्ञान के महत्व का बोध प्राप्त कर सकेंगे।
- तर्कभाषापठन से विद्यार्थी न्याय–दर्शन की मूल संरचना–प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द आदि का ज्ञानार्जन करेंगे।
- न्याय–पदार्थों, हेत्वाभासों तथा अनुमान–प्रक्रिया की स्पष्ट समझ हासिल करेंगे।
- वेदान्तसार के अध्ययन से विद्यार्थी अद्वैतवेदान्त के ब्रह्म, जीव, माया, उपाधि, जीवन्मुक्ति आदि सिद्धान्तों का ज्ञान पा सकेंगे।
- श्रवण, मनन, निदिध्यासन की पद्धति और जीवनमुक्ति की प्रक्रिया का बोध कर सकेंगे।
- महावाक्य–व्याख्या और अद्वैत सिद्धान्त के तर्कसंगत पक्ष की समझ हासिल कर सकेंगे।
- योगसूत्र द्वारा चित्तवृत्ति, अष्टाङ्गयोग, समाधि, क्लेश और कर्माशय आदि का समर्थ ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- समाधि एवं साधना पाद का क्रमबद्ध अध्ययन से साधना–पद्धति, मानसिक–संयम और योग–मनोविज्ञान का बोध कर सकेंगे।

कौशल प्रशिक्षण

- सांख्यकारिका के अध्ययन से विद्यार्थियों में दार्शनिक तर्कों का विश्लेषण और तुलनात्मक अध्ययन करने का कौशल आयेगा।
- सूत्र शैली में लिखे दार्शनिक वाक्यों को व्याख्यायित करने का कौशल।
- जीवन–स्थितियों में विवेक–ख्याति, गुण–परिवर्तन एवं निर्णय क्षमता का विकास।
- तर्कभाषा अध्ययनोपरांत तर्कपूर्ण कथन निर्माण और विश्लेषण की क्षमता विकसित होगी।
- प्रमाणादि, हेत्वाभासों के गुण–दोषों की पहचान करने की तर्क–शक्ति आयेगी।
- निर्णय–निर्माण, आलोचनात्मक चिंतन और वाद–विवाद का वैज्ञानिक कौशल उत्पन्न होगा।

प्रभारी अकादमिक प्रथम

- वेदान्तसार से उपनिषद्–वाक्यों का तात्पर्य–निर्णय करने की क्षमता के साथ दार्शनिक विश्लेषण, आध्यात्मिक विमर्श और ग्रन्थ–व्याख्या का कौशल तथा आत्म–बोध, वैचारिक सुस्पष्टता और दार्शनिक विवेक का विकास होगा।
- योगसूत्र द्वारा ध्यान, एकाग्रता, मनःसंयम और सूक्ष्म निरीक्षण की क्षमता में वृद्धि होगी।
- नैतिक–आत्मिक अनुशासन (यम–नियम) और व्यावहारिक जीवन–मैनेजमेंट कौशल की प्राप्ति होगी।
- तनाव–नियन्त्रण, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और आत्म–प्रेरणा कौशल अर्जित कर सकेंगे।

पाठ्यक्रमगत अपेक्षा

- सांख्यकारिका की कारिकाओं का शाब्दिक–अर्थ, भावार्थ और तात्त्विक विवेचन।
- अन्य दर्शनों (विशेषतः योग, वेदान्त) से तुलनात्मक अध्ययन।
- प्रामाण्य, पुरुषार्थ और मोक्ष की सांख्य–पद्धति पर निबंध/प्रोजेक्ट कार्य।
- तर्कभाषा पाठ्यक्रम से न्याय–श्रेणी, अनुमान–लक्षण, हेत्वाभास आदि का व्यावहारिक उदाहरणों सहित अध्ययन।
- छोटे–छोटे वाद–विवाद, तर्कात्मक अभ्यास, केस–स्टडी कार्य के साथ सूत्रों और संज्ञाओं के अर्थ–व्याख्या का अभ्यास।
- वेदान्तसार से अद्वैत वेदान्त के आधारभूत सिद्धांतों की व्याख्या, अनुभववाक्य एवं महावाक्यों पर निबंध, टीकात्मक अभ्यास।
- वेदान्त–दर्शन का सांख्य/न्याय आदि के साथ तुलनात्मक अध्ययन।
- योगसूत्र के सूत्रों का पदच्छेद, अनुवाद और टीकात्मक तुलनात्मक अध्ययन।
- ध्यान–अभ्यास, प्राणायाम एवं चित्त–विकार पर आधारित व्यावहारिक कार्य।
- योग–दर्शन और सांख्य–दर्शन के पारस्परिक संबंध का अध्ययन।

पाठ्यक्रम की प्रकृति	: मेजर	प्रश्नपत्र प्रकृति	: सैद्धान्तिक	पाठ्यक्रम क्रेडिट	: 04
शिक्षण अवधि	: 90 दिवस	प्रति सप्ताह कालांश	: 04	पूर्णांक	: 100

नोट :– पूर्णांक का 20 प्रतिशत अंकभार मध्यावधि आन्तरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित है।

प्रभारी अकादमिक प्रथम

इकाई अनुसार पाठ्यक्रम

इकाई	पाठ्यांश	भाग	अंक–विभाजन	अंक	
1.	ईश्वरकृष्णविरचित सांख्यकारिका (सम्पूर्ण)	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 कारिकाओं में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
2.	केशवमिश्रकृत तर्कभाषा (शब्दप्रमाण तक)	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 उद्धरणों / गद्यांशों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
3.	सदानन्दकृत वेदान्तसार (सम्पूर्ण)	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 उद्धरणों / गद्यांशों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
4.	पतंजलिकृत योगसूत्र (प्रथम एवं द्वितीय पाद)	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 सूत्रों में से किन्हीं 02 की व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
भाग 'अ' में 01 प्रश्न (02–02 अंक के 08 लघूत्तरात्मक उपप्रश्न) अंक 16। भाग 'ब' में 64 अंक के 04 प्रश्न होंगे।				कुल =	**80**

पाठ्यक्रम के अधिगम हेतु सहायक पुस्तकें

क्र.	पुस्तक	व्याख्याकार	प्रकाशन	ISBN
1.	सांख्यकारिका	प्रो. देवेन्द्रनाथ पाण्डेय	आयुर्वेद हिन्दी संस्कृत पुस्तक भंडार, जयपुर	– – –
2.	सांख्यकारिका	डॉ. व्रजमोहन चतुर्वेदी	नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली –110006	– – –
3.	तर्कभाषा	डॉ. अर्कनाथ चौधरी	आयुर्वेद हिन्दी संस्कृत पुस्तक भंडार, जयपुर	– – –
4.	तर्कभाषा	डॉ. शिवबालक द्विवेदी	हंसा प्रकाशन, जयपुर	– – –
5.	तर्कभाषा	डॉ. श्रीनिवास शास्त्री	साहित्य भण्डार,	– – –
6.	वेदान्तसार	डॉ. कृष्णकान्त त्रिपाठी	साहित्य भण्डार, मेरठ	– – –
7.	वेदान्तसार	डॉ. तारिणीश झा	प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ	– – –
8.	योगसूत्र	डॉ. अमलधारी सिंह	भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी	– – –
9.	योगसूत्र	गीताप्रेस	गीता प्रेस, गोरखपुर	– – –

प्रभारी अकादमिक प्रथम

Web Resources -

तर्कभाषा – **https://share.google/FLr4hTEMJBQatfrpj** ,

वेदान्तसार – https://share.google/WN7ziOzztij2VPAsP , **https://share.google/xfnZnwTjWXbQuptlx**

सांख्यकारिका – **https://share.google/bAcsWMndFjAqccBQ1** **https://share.google/74UAsvTpKhpKfsGki**

योगसूत्र – https://share.google/F8USByRXomkiJxLJL

स्नातकोत्तर–संस्कृत, प्रथम सेमेस्टर

Centric Core Elective Paper-IV नीति एवं कथा साहित्य

Course Code - SAN-10104-T

अधिगम–प्रतिफल

- विद्यार्थी धर्म, नीति, सदाचार और व्यवहार के सिद्धांतों का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- चाणक्य के राजनीति, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, जीवन–व्यवहार और प्रबंधन से संबंधित विचारों को समझ सकेंगे।
- जीवन में विवेक, संयम, समय–प्रबंधन, संगति–चयन और लक्ष्य–केन्द्रितता के मूलभूत सिद्धांतों को पहचान पाएंगे।
- छात्र चाणक्य नीति के प्रमुख अध्यायों, सूत्रों और उनकी पृष्ठभूमि का सैद्धांतिक ज्ञान अर्जित करेंगे।
- विद्यार्थी पंचतंत्र की कथात्मक संरचना, पाँच तंत्रों और उनके विषय–वस्तु को समझ सकेंगे।
- लोककथाओं, दृष्टांतों और जन–शिक्षा परम्परा के साहित्यिक महत्व को पहचान सकेंगे।
- पंचतंत्र की कथाओं में निहित नीति, नैतिक शिक्षा, राजनीति और जीवन–दर्शन का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- मित्रता, बुद्धि, राजनीति, विश्वास, कपट, लोभ आदि विषयों का मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आधार समझ पाएंगे।

कौशल प्रशिक्षण

- विद्यार्थी कठिन परिस्थितियों में अच्छे–बुरे मित्रों की पहचान कर संगति–निर्णय में दक्षता हासिल कर सकेंगे।
- चाणक्य के व्यवहारिक सूत्रों का उपयोग कर समस्या–समाधान क्षमता बढ़ेगी।
- अध्ययन, समय–प्रबंधन और लक्ष्य–निर्धारण में स्व–अनुशासन विकसित होगा।

- व्यवहारिक बुद्धिमत्ता, नेतृत्व, और रणनीतिक सोच जैसे कौशल विकसित होंगे।
- सत्य, विनम्रता, चरित्र–निर्माण और नैतिक आचरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा।
- जीवन की चुनौतियों का सामना धैर्य और आत्मविश्वास के साथ करना सीखेंगे।
- विद्यार्थी आत्म–संयम, गोपनीयता, और सकारात्मक सोच जैसे गुणों को अपनाने में सक्षम होंगे।
- असफलता से सीखकर आगे बढ़ने की मेहनती और दृढ़ संकल्प वाली मानसिकता विकसित होगी।
- छात्र कथाओं के माध्यम से व्यावहारिक समस्या–समाधान की समझ विकसित करेंगे।
- उचित निर्णय लेने, जोखिम पहचानने और परिस्थितियों का विश्लेषण करने की क्षमता में सुधार होगा।
- कथा–कथन, सार लेखन और संवाद–कौशल के साथ कथानायकों के चरित्रों और घटनाओं से ज्ञान में वृद्धि होगी।

पाठ्यक्रमगत अपेक्षा

- विद्यार्थी जीवन की समस्याओं को चाणक्य नीतियों के प्रकाश में तार्किक और बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से समझने में सक्षम होंगे।
- निजी, सामाजिक और शैक्षणिक जीवन में संतुलित, नैतिक और व्यावहारिक सोच विकसित करेंगे।
- चाणक्य नीति के माध्यम से जीवन–प्रबंधन, स्व–नियंत्रण और मानवीय मूल्यों की गहरी समझ विकसित होगी।
- विद्यार्थी चाणक्य नीति के सिद्धांतों का उपयोग अपने अध्ययन, सामाजिक जीवन और व्यक्तिगत विकास में कर सकेंगे।
- नैतिक और व्यावहारिक विचारों का प्रयोग कर नेतृत्व एवं प्रबंधन क्षमता में वृद्धि करेंगे।
- रोज़मर्रा के जीवन में उचित व्यवहार, संवाद–शैली और निर्णयों में नीति–आधारित व्यवहार लागू कर सकेंगे।
- जीवन में सदाचार, सत्य, संयम, मित्रता और सहानुभूति जैसे नैतिक मूल्य विकसित होंगे।
- बुरे साथियों, गलत निर्णयों, अति–विश्वास और कपट के परिणामों की सकारात्मक चेतना विकसित होगी।
- विद्यार्थियों में सहयोग, बुद्धिमानी, धैर्य और आत्म–नियंत्रण की भावना मजबूत होगी।
- कथाओं के माध्यम से जीवन को देखने की परिपक्व और संतुलित दृष्टि विकसित होगी।

पाठ्यक्रम की प्रकृति : मेजर	प्रश्नपत्र प्रकृति : सैद्धान्तिक	पाठ्यक्रम क्रेडिट : 04
शिक्षण अवधि : 90 दिवस	प्रति सप्ताह कालांश : 04	पूर्णांक : 100

नोट :– पूर्णांक का 20 प्रतिशत अंकभार मध्यावधि आन्तरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित है।

उपकुलसचिव
प्रभारी अकादमिक प्रथम

इकाई अनुसार पाठ्यक्रम

इकाई	पाठ्यांश	भाग	अंक–विभाजन	अंक	
1. चाणक्यनीति	प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय अध्याय	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 श्लोकों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
2. चाणक्यनीति	पंचम, सप्तम एवं एकादश अध्याय	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 श्लोकों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
3. पंचतन्त्र	मित्रभेद एवं मित्रलाभ	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 पद्यों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
4. पंचतन्त्र	काकोलूकीयम् एवं लब्धप्रणाशम्	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 पद्यों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
भाग 'अ' में 01 प्रश्न (02–02 अंक के 08 लघूत्तरात्मक उपप्रश्न) अंक 16। भाग 'ब' में 64 अंक के 04 प्रश्न होंगे।				कुल=	80

पाठ्यक्रम के अधिगम हेतु सहायक पुस्तकें

क्र.	पुस्तक	व्याख्याकार	प्रकाशन	ISBN
1.	चाणक्यनीति	प्रो. सत्यव्रत शास्त्री	भारतीय विद्या मन्दिर, कोलकाता	9788180902055
2.	चाणक्यनीति	पं. राधाकृष्ण श्रीमाली	अनुराग प्रकाशन, मेहरोली, दिल्ली	– – –
3.	पंचतन्त्र	श्री वासुदेव शरण अग्रवाल	ई–पुस्तकालय	– – –
4.	पंचतन्त्र	श्री विष्णु शर्मा	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी	– – –

Web Resources - चाणक्यनीति – https://share.google/SGP31ATRh0Wcxakw2 , https://share.google/HXnlJETrjnRFuV1CE

पंचतन्त्र – https://share.google/Q74CMFK67pDtQlFkR

प्रभारी अकादमिक प्रथम

स्नातकोत्तर–संस्कृत, प्रथम सेमेस्टर

Centric Core Elective Paper-IV गीति एवं स्तोत्रकाव्य

Course Code - SAN-10105-T

अधिगम–प्रतिफल

- छात्र दूतकाव्य की परम्परा, उसकी विशेषताओं और मेघदूत की संरचना को समझ पाएंगे।
- संदेश–वहन आधारित काव्यों में विषय–विस्तार, पर्यावरण, भौगोलिक वर्णन एवं विरह–भाव का विश्लेषण कर सकेंगे।
- कालिदास की ऋतु–वर्णन, पर्वत, वन, नदियों के सौंदर्य–चित्रण के साथ प्राकृतिक दृश्य और भावों को समझ सकेंगे।
- उज्जयिनी, रामगिरि, अमरकंटक, विन्ध्य, हिमालय, यक्ष–यक्षिणी आदि के सांस्कृतिक संदर्भ समझ पाएंगे।
- मार्ग–वर्णन के माध्यम से प्राचीन भारत की भू–दृश्यात्मक सौंदर्य, लोकाचार और संस्कृति का ज्ञान बढ़ेगा।
- यक्ष के मनोभावों का विश्लेषण कर विरह, आशा, प्रेम, निष्ठा और प्रतीक्षा जैसे भावों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति को समझ सकेंगे।
- छात्र शक्ति–शिव की अभिन्नता, अद्वैत दृष्टि और शक्ति–दर्शन के मूलभूत सिद्धांत समझ सकेंगे।
- पंचदशी मंत्र, श्रीविद्या परम्परा, श्रीचक्र की संरचना और तांत्रिक साधना के प्रमुख सिद्धांतों को समझ पाएंगे।
- तांत्रिक और वैदिक उपासना पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

कौशल प्रशिक्षण

- पाठ–आधारित व्याख्या, आलोचनात्मक मूल्यांकन और रचनात्मक विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होगी।
- विभिन्न काव्यों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।
- सौन्दर्यलहरी के अध्ययन से छात्र शक्ति–दर्शन, योगतंत्र, देवी–भक्ति, दार्शनिक विचारों का बहुआयामी ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- तांत्रिक साहित्य, भक्ति–काव्य और दार्शनिक ग्रंथों की व्याख्या में सक्षम होंगे।
- आंतरिक शक्ति, मनोबल, शांति, ध्यान–तत्त्व और मानसिक अनुशासन के पक्षों को समझ सकेंगे।
- आध्यात्मिक साहित्य के मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन कर सकेंगे।

पाठ्यक्रमगत अपेक्षा

- प्रेम, निष्ठा, आत्मीयता, धैर्य और त्याग जैसे मूल्यों की पहचान होगी।
- सौंदर्य, प्रकृति और भावनाओं के प्रति संवेदनशील दृष्टि विकसित होगी।

प्रभारी अकादमिक प्रधान

- भौगोलिक व सांस्कृतिक चित्रण सबका गहन अध्ययन और विश्लेषण कर सकेंगे।
- सौंदर्यलहरी से कुण्डलिनी के आरोहण, चक्र–साधना (मूलाधार से सहस्रार तक), तथा नाड़ी–तंत्र का ज्ञान विकसित होगा।
- यौगिक–तांत्रिक तथा आध्यात्मिक साधना की प्रक्रियाएँ समझ सकेंगे।

पाठ्यक्रम की प्रकृति	: मेजर	प्रश्नपत्र प्रकृति	: सैद्धान्तिक	पाठ्यक्रम क्रेडिट	: 04
शिक्षण अवधि	: 90 दिवस	प्रति सप्ताह कालांश	: 04	पूर्णांक	: 100

नोट :– पूर्णांक का 20 प्रतिशत अंकभार मध्यावधि आन्तरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित है।

इकाई अनुसार पाठ्यक्रम

इकाई	पाठ्यांश	भाग	अंक–विभाजन	अंक	
1. मेघदूतम्	पूर्वमेघ	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	**20**
		'ब'	04 श्लोकों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या।	05+05	
			02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	06	
2. मेघदूतम्	उत्तरमेघ	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	**20**
		'ब'	04 श्लोकों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या।	05+05	
			02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	06	
3. सौन्दर्यलहरी	आनन्दलहरी (प्रथम 41 श्लोक)	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	**20**
		'ब'	04 पद्यों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या।	05+05	
			02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	06	
4. सौन्दर्यलहरी	सौन्दर्यलहरी (श्लोक 42 से 100 श्लोक)	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	**20**
		'ब'	04 पद्यों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या।	05+05	
			02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	06	
भाग 'अ' में 01 प्रश्न (02–02 अंक के 08 लघूत्तरात्मक उपप्रश्न) अंक 16। भाग 'ब' में 64 अंक के 04 प्रश्न होंगे।				**कुल=**	**80**

प्रभारी अकादमिक प्रथम

पाठ्यक्रम के अधिगम हेतु सहायक पुस्तकें

क्र.	पुस्तक	व्याख्याकार	प्रकाशन	ISBN
1.	मेघदूत	श्री वैद्यनाथ झा शास्त्री	कृष्णदास अकादमी, वाराणसी	– – –
2.	मेघदूत	मल्लिनाथ	ई–पुस्तकालय	– – –
3.	सौन्दर्यलहरी	पं. हरिहर प्रसाद त्रिपाठी	चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी	– – –
4.	सौन्दर्यलहरी	पं. कुलपति मिश्रा	रणधीर बुक प्रकाशन, हरिद्वार	– – –

Web Resources –

मेघदूत – https://ia801609.us.archive.org/19/items/Meghadutam/Meghadutam.pdf https://share.google/8I5hYOUesvd5UJUDR

सौन्दर्यलहरी – https://www.google.com/url?client=internal-element-cse&cx=004348703522335492930:a7xjkkdafcy&q=https://epustakalay.com/book/268852-saundaryallahari-ed-3-by-muni-ganapati-shankaracharya/&sa=U&ved=2ahUKEwiq4dyYmPaQAxX6cGwGHZ3BCdMQFnoECAcQAQ&usg=AOvVaw1Pt0fNy723L7Xfy6KfNGcT&fexp=73177438,73177439

https://share.google/R5rXs5MjW3rfVxk29

प्रभारी अकादमिक प्रथम

स्नातकोत्तर–संस्कृत, प्रथम सेमेस्टर

Centric Core Elective Paper-IV   ब्राह्मण एवं आरण्यक साहित्य

Course Code - SAN-C10106-T

अधिगम–प्रतिफल

- छात्र अग्निष्टोम यज्ञ के पाँच–स्तुति क्रम (स्तोम–प्रकार), उसकी विधि और क्रम को समझ सकेंगे।
- सृष्टि–वर्णन व यज्ञ–उत्पत्ति का दर्शन समझेंगे।
- शतपथ ब्राह्मण से अग्नि स्थापना और उससे जुड़े मन्त्रों का अर्थ जानेंगे।
- यज्ञीय देवताओं की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।
- वैदिक संस्कृति की मूलभूत आध्यात्मिक एवं सामाजिक अवधारणाओं को समझ सकेंगे।
- शतपथ ब्राह्मण की तर्कसंगत और दार्शनिक शैली से परिचित होंगे।
- साम–गान और प्राण की श्रेष्ठता के सिद्धांतों को आत्मसात करेंगे।
- उपनिषद् की प्रतीकात्मक व्याख्या–परम्परा से परिचित होंगे।
- छान्दोग्योपनिषद् की दार्शनिक शैली और उपासना–ध्यान पद्धति की आधारभूत समझ विकसित करेंगे।
- तैत्तिरीयोपनिषद् से वैदिक उच्चारण व शिक्षाशास्त्र की मूल तकनीक सीखेंगे।
- सत्य, धर्म, दान, आचार और नैतिकता जैसे जीवन–मूल्यों को आत्मसात करेंगे।
- ब्रह्मविद्या की प्रारम्भिक भूमिका और मानव–धर्म का समन्वित स्वरूप जानेंगे।

कौशल प्रशिक्षण

- ऐतरेय ब्राह्मण के अध्ययन से वैदिक संस्कृति के अनुसार वैदिकयज्ञ–विधियों का विश्लेषण करने की क्षमता आयेगी।
- प्राचीन वैदिक समाज, राजसूय, सोमयाग आदि के प्रयोगात्मक पक्ष की समझ विकसित होगी।
- वैदिक कथाओं (जैसे शुनःशेप, विश्वामित्र) से नैतिक–मूल्य आधारित निर्णय लेने की क्षमता उत्पन्न होगी।
- वैदिक संस्कृत गद्य का पठन–अनुवाद करने की दक्षता सम्बन्धी भाषिक कौशल विकसित होगा।

प्रभारी अकादमिक प्रथम

- शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से सृष्टिवाद, यज्ञवाद, दार्शनिक अवधारणाओं से सृष्टि–व्याख्या, ऋत–सिद्धान्त, यज्ञ–ब्रह्मवाद की गहरी समझ विकसित होगी।
- 'तत्त्वमसि', 'उपासना', 'ओंकार–विद्या', 'सत्यकाम' जैसे सिद्धान्तों को समझ कर आत्मा, ब्रह्म और जगत् के संबंध पर तार्किक चिन्तन कौशल विकसित होगा।
- गुरु–शिष्य संवाद की परम्परा का अनुकरण; चरित्र–निर्माण जैसे नैतिक–आचरण संबंधी कौशल विकसित होंगे।
- दार्शनिक कथाओं को उदाहरण सहित स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करना एवं वैदिक शैली के संवादों को विश्लेषित करना।
- तैत्तिरीय उपनिषद् शिक्षावल्ली से पंचकोश–सिद्धान्त (अन्नमय से आनन्दमय तक) का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- शिक्षावल्ली के माध्यम से स्वर, मात्रा, उच्चारण का प्रशिक्षण ले सकेंगे।
- आचार–शिक्षा एवं व्यक्तित्व–विकास के साथ वैदिक ध्वनि–विज्ञान की व्यावहारिक समझ प्राप्त कर सकेंगे।
- "मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव" जैसे नैतिक–सूत्रों को आत्मसात् करने में कुशलता आयेगी।

पाठ्यक्रम की प्रकृति	: मेजर	प्रश्नपत्र प्रकृति	: सैद्धान्तिक	पाठ्यक्रम क्रेडिट	: 04
शिक्षण अवधि	: 90 दिवस	प्रति सप्ताह कालांश	: 04	पूर्णांक	: 100

नोट :– पूर्णांक का 20 प्रतिशत अंकभार मध्यावधि आन्तरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित है।

इकाई अनुसार पाठ्यक्रम

इकाई	पाठ्यांश	भाग	अंक–विभाजन	अंक	
1. ऐतरेय ब्राह्मण	अष्टम पंचिका अध्याय 1–2	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 गद्य/मंत्रों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
2. शतपथ ब्राह्मण	प्रथम काण्ड प्रथम अध्याय	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20

प्रभारी अधिकारी

(माध्यन्दिन)		'ब'	04 गद्य/मंत्रों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
3. छान्दोग्योपनिषद्	प्रथम अध्याय कण्डिका 1–2	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 गद्य/मंत्रों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
4. तैत्तिरीयोपनिषद्	शिक्षा वल्ली	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 गद्य/मंत्रों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
भाग 'अ' में 01 प्रश्न (02–02 अंक के 08 लघूत्तरात्मक उपप्रश्न) अंक 16। भाग 'ब' में 64 अंक के 04 प्रश्न होंगे।				कुल =	80

पाठ्यक्रम के अधिगम हेतु सहायक पुस्तकें

क्र.	पुस्तक	व्याख्याकार	प्रकाशन	ISBN
1.	ऐतरेय ब्राह्मण	सायण भाष्य एवं हिन्दी टीका	तारा पब्लिकेशन, वाराणसी	– – –
2.	ऐतरेय ब्राह्मण	श्री षड्गुरुशिष्य	नई दिल्ली	– – –
3.	शतपथ ब्राह्मण	सायण भाष्य सहित	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी	– – –
4.	शतपथ ब्राह्मण	स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती	आर्य साहित्य भवन, गोहा	9788170770165
5.	छान्दोग्योपनिषद्	रायबहादुर	बाबू जालिम सिंह, वाराणसी	– – –
6.	छान्दोग्योपनिषद्	गीता प्रेस गोरखपुर	गीता प्रेस गोरखपुर	– – –
7.	तैत्तिरीयोपनिषद्	श्री सच्चिदानंदेन्द्र सरस्वती	अध्यात्म प्रकाशन कार्यालय, होलनरसीपुरा	– – –
8.	तैत्तिरीयोपनिषद्	शांकरभाष्य सहित	गीता प्रेस गोरखपुर	– – –

Web Resources –

ऐतरेय ब्राह्मण – https://share.google/df2iGMO3Ls98HDBOe

छान्दोग्योपनिषद् – https://share.google/sn49pmPKV6cZXMzgn

तैत्तिरीयोपनिषद – https://archive.org/details/dli.language.1647

प्रभारी अकादमिक प्रधान

स्नातकोत्तर–संस्कृत, प्रथम सेमेस्टर

Centric Core Elective Paper-V वीरकाव्य एवं पुराण

Course Code - SAN-10107-T

अधिगम–प्रतिफल

- समस्याओं के समाधान, निर्णय क्षमता व नेतृत्व गुणों के अनुभव के साथ धर्म, मर्यादा, संयम और विवेक के व्यावहारिक महत्व को समझेंगे। आदर्श चरित्रों के अध्ययन से नैतिकता, मर्यादा और साहस का पाठ समझ सकेंगे।
- सुन्दरकाण्ड के अध्ययन से समुद्र–लंघन, पर्वत उठाना, पर्वत–तुला आदि कठिनाइयों पर प्राप्त विजय के द्वारा मनोबल और मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे।
- अरण्यकाण्ड के 11वें सर्ग (सूर्पणखा प्रसंग) से सूर्पणखा–आगमन, उसकी इच्छा, राम व लक्ष्मण का संवाद, तथा उसके दण्ड–वर्णन द्वारा धर्म–अधर्म के सिद्धान्त को जान सकेंगे।
- स्त्री–पुरुष संबंधों की मर्यादा, शिष्टाचार, और मर्यादापुरुषोत्तम राम के आदर्श व्यवहार को समझेंगे।
- विद्यार्थी पहचानेंगे कि सूर्पणखा प्रसंग आगे रावण–युद्ध और सीता–हरण की भूमिका तैयार करता है।
- सीता, सूर्पणखा, मंदोदरी जैसे पात्रों की तुलना कर विभिन्न स्त्री–स्वरूपों के साहित्यिक चित्रण को समझ सकेंगे।
- महाभारत में वर्णित ययाति के जीवन और इच्छाओं के बीच के संतुलन एवं चरित्र के विषय में छात्र जान पायेंगे।
- ययाति और उसके वंशजों के कर्मों से उत्पन्न परिणामों के कारण एवं फल विश्लेषण के साथ वयस्कता, जिम्मेदारी और आत्मसंयम के महत्व को समझ पाएँगे।
- आदिपर्व में वर्णित भीष्मजन्म और प्रतिज्ञा प्रसंग से छात्र संकल्प और प्रतिज्ञा की शक्ति और स्थिरता को जानेंगे।
- भीष्म का चरित्र, आदर्श नेतृत्व, त्याग, धर्मनिष्ठता और जीवन–निर्णयों का मूल्य समझेंगे।
- श्रीमद्भागवत पुराण के अध्ययन से विद्यार्थी समझ सकेंगे कि प्रकृति (पृथ्वी, आकाश, वायु, अग्नि, चन्द्र, सूर्य आदि) जीवन के मार्गदर्शन हेतु कैसे गुरु बनती हैं।
- अवधूत की जीवन–पद्धति, वैराग्य, आत्मतुष्टि, तथा आसक्ति–त्याग के सिद्धान्तों को समझ पाएँगे।
- यदु और अवधूत के बीच संवाद की शास्त्रीय अभिव्यक्ति, शैली और वाक्य–विन्यास का विश्लेषण कर सकेंगे।

प्रभारी अकादमिक प्रथम

- भागवत पुराण के एकादश स्कन्ध के अध्याय 8 में वर्णित चौबीस गुरुजनों की शिक्षाओं से तात्विक विवेचन एवं उसका व्यावहारिक अर्थ समझ पाएँगे। पुराण साहित्य के अध्ययन से विद्यार्थी अष्टादश पुराणों का सामान्य परिचय जान सकेंगे।

कौशल प्रशिक्षण

- अनैतिक इच्छा, छल, और अनुचित आचरण के परिणाम का नैतिक विश्लेषण करने का कौशल पा सकेंगे।
- सूर्पणखा का चरित्र– काम, क्रोध, अहंकार और आवेग का अध्ययन कर पात्र–विश्लेषण कौशल विकसित करेंगे।
- भीष्मचरित से संकल्पस्थिरता, प्रतिज्ञापालन, आत्म–नियंत्रण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और जिम्मेदारी का कौशल विकसित होगा।
- ययाति चरित से नैतिक निर्णय, इच्छा–नियंत्रण, नेतृत्व कौशल, कर्म–फल विश्लेषण, जीवन कौशल प्राप्त होगा।
- श्रीमद्भागवत् पुराण के अध्ययन से विद्यार्थियों में प्रकृति के निरीक्षण से शिक्षाएँ लेने का कौशल विकसित होगा।
- पृथ्वी से धैर्य और क्षमा, वायु से अनासक्ति, जल से पवित्रता, अग्नि से शुचिता, अजगर से संतोष, मधुमक्खी से सावधानी, कुमारी से एकाग्रता, मृग से सावधानी, गजराज से विवेक जैसे गुणों को अपनाने एवं चरित्र निर्माण और जीवन–व्यवहार कौशल विकसित होगा।
- पाठ्यक्रम से अवलोकन, विश्लेषण, व्याख्या, निर्णय क्षमता, जीवन–प्रबंधन आदि कौशलों का विकास होगा।
- पुराणों के पंचलक्षणज्ञान में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम की प्रकृति : मेजर
शिक्षण अवधि : 90 दिवस
प्रश्नपत्र प्रकृति : सैद्धान्तिक
प्रति सप्ताह कालांश : 04
पाठ्यक्रम क्रेडिट : 04
पूर्णांक : 100

नोट :– पूर्णांक का 20 प्रतिशत अंकभार मध्यावधि आन्तरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित है।

इकाई अनुसार पाठ्यक्रम

इकाई	पाठ्यांश	भाग	अंक–विभाजन	अंक	
1. रामायणम्	सुन्दरकाण्ड–प्रथम सर्ग, अरण्यकाण्ड– 11वां सर्ग	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 श्लोकों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	

प्रभारी अकादमिक प्रथम

2. महाभारतम्	आदिपर्व अध्याय 75–90 ययाति वर्णन, अध्याय 94–100 भीष्मजन्म और प्रतिज्ञा प्रसंग	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 श्लोकों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
3. श्रीमद्भागवत पुराणम्	एकादश स्कन्ध अध्याय 7–8	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 श्लोकों में से 02 की सप्रसंग व्याख्या। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
4. पुराण साहित्य का परिचय	अष्टादश पुराणों का सामान्य परिचय एवं पंचलक्षण	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 टिप्पणियों में से 02 पर टिप्पणीलेखन। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
भाग 'अ' में 01 प्रश्न (02–02 अंक के 08 लघूत्तरात्मक उपप्रश्न) अंक 16। भाग 'ब' में 64 अंक के 04 प्रश्न होंगे।				कुल =	80

पाठ्यक्रम के अधिगम हेतु सहायक पुस्तकें

क्र.	पुस्तक	व्याख्याकार	प्रकाशन	ISBN
1.	वाल्मीकिरामायणम्	पं. द्वाराकाप्रसाद शर्मा, तारिणीश झा	रामनारायणलाल अरुणकुमार, इलाहाबाद	– – –
2.	वाल्मीकिरामायणम्	गीता प्रेस गोरखपुर	गीता प्रेस, गोरखपुर	– – –
3.	महाभारतम् आदिपर्व	गीता प्रेस गोरखपुर	गीता प्रेस, गोरखपुर	– – –
4.	महाभारतम् आदिपर्व	शंकर नरहर जोशी	चित्रशाला मुद्रणालय, पुण्यपत्तन	– – –
5.	श्रीमद्भागवतपुराणम्	डॉ. राममूर्ति शास्त्री	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, नई दिल्ली	– – –
6.	श्रीमद्भागवतपुराणम्	पं. रामतेज पाण्डेय	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, नई दिल्ली	– – –

Web Resources –

रामायण सुन्दरकाण्ड–प्रथम सर्ग – https://share.google/yKDPLy1KZWFonUf3S

महाभारत आदिपर्व – https://share.google/mjhTHyrftgRQdlWwM

श्रीमद्भागवत् पुराण – https://share.google/R8Vg0Rfu4fKjGIkpP

प्रभारी अकादमिक प्रथम

स्नातकोत्तर–संस्कृत, प्रथम सेमेस्टर

Centric Core Elective Paper-V पाण्डुलिपि एवं अभिलेख

Course Code - SAN-CCE-T105-3 10108-T

अधिगम–प्रतिफल

- विद्यार्थी पाण्डुलिपि–विज्ञान की परिभाषा, इतिहास, महत्व एवं इसकी मूलभूत समझ विकसित कर सकेंगे।
- भारत की देवनागरी, शारदा, ब्राह्मी, नागरी आदि प्रमुख लिपियों का प्रारंभिक स्वरूप जान सकेंगे।
- प्राचीन लिपियों के अक्षररूप, मात्राएँ, संधि–विच्छेद, विरामचिह्न तथा शैलीगत भिन्नताओं की पहचान कर सकेंगे।
- कठिन, अपूर्ण या क्षतिग्रस्त पाण्डुलिपियों का प्रारम्भिक पठन व पुनर्निर्माण कर सकेंगे।
- कर्गद, ताड़पत्र, शिला, ताम्रपत्रादि पर लिखी पाण्डुलिपियों के पदार्थ, निर्माण–प्रक्रिया, स्याही, लेखनी आदि को जान सकेंगे।
- पाण्डुलिपियों के भौतिक संरक्षण के सिद्धांत– तापमान, आर्द्रता, कीट–नियंत्रण, पुनर्सरक्षण आदि को समझ सकेंगे।
- डिजिटलाइजेशन तकनीकों, फोटो–डॉक्यूमेंटेशन, स्कैनिंग और मेटाडाटा निर्माण की प्रक्रिया सीख सकेंगे।
- विभिन्न पाण्डुलिपि प्रतियों का तुलनात्मक अध्ययन करके मूल पाठ की स्थापना कर सकेंगे।
- पाण्डुलिपियों के आधार पर ऐतिहासिक, भाषाई और सांस्कृतिक निष्कर्ष निकाल सकेंगे।
- प्रामाणिक शोध–प्रबंध, संपादित ग्रंथ, कैटलॉग–तैयारी और विवेचनात्मक लेखन कर सकेंगे।
- वेदोपनिषद्, आगम, तन्त्र, इतिहास चिकित्सा, ज्योतिष और साहित्य परम्परा की पाण्डुलिपि–समृद्धि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- प्राचीन भारतीय अभिलेखों के अध्ययन से विद्यार्थी अभिलेख और पाण्डुलिपि के बीच भेद, अभिलेखीय स्रोतों के प्रकारों के साथ उद्देश्य, विकास–इतिहास और भारतीय परम्परा के महत्व को पहचान सकेंगे।

कौशल प्रशिक्षण

- पाण्डुलिपि–पठन कार्यशालाओं में अक्षर–पहचान से लेकर पृष्ठ–विन्यास तक अभ्यास कर सकेंगे।
- ब्राह्मी, खरोष्ठी, नागरी, कुटिल, शारदा, गुप्त लिपि आदि के मूल अक्षररूपों की पहचान कर सकेंगे।
- प्राचीन अभिलेखों की भाषा (संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि) के व्याकरण एवं शब्दरूपों का प्रारंभिक पठन कर सकेंगे।
- पाण्डुलिपि इमारतों/पुस्तकालयों में सूचीकृत, वर्गीकरण और संरक्षण में दक्षता प्राप्त करेंगे।

प्रभारी अकादमिक प्रधम

- सांस्कृतिक विरासत के प्रति उत्तरदायित्व, कॉपीराइट, डिजिटल एक्सेस और अभिलेख–संरक्षण की नैतिकता समझ सकेंगे।
- अभिलेखीय स्रोतों से ऐतिहासिक पुनर्निर्माण, राजनीतिक इतिहास (राजवंश, शासन–क्रम, युद्ध, विजयादि), सामाजिक जीवन, अर्थव्यवस्था, व्यापार, धर्म और संस्कृति पर अभिलेखों से प्रमाण जुटाने में सक्षम हो सकेंगे।
- डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन, फ़ोटोग्रामेट्री, 3डी स्कैनिंग तथा डिजिटल आर्काइविंग के व्यावहारिक कौशल अर्जित कर सकेंगे।
- अभिलेख–संपादन, कैटलॉगिंग, डेटाबेस निर्माण एवं शोध–लेखन में दक्षता प्राप्त करेंगे।

पाठ्यक्रम की प्रकृति : मेजर | **प्रश्नपत्र प्रकृति : सैद्धान्तिक** | **पाठ्यक्रम क्रेडिट : 04**

शिक्षण अवधि : 90 दिवस | **प्रति सप्ताह कालांश : 04** | **पूर्णांक : 100**

नोट :– पूर्णांक का 20 प्रतिशत अंकभार मध्यावधि आन्तरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित है।

इकाई अनुसार पाठ्यक्रम

इकाई	पाठ्यांश	भाग	अंक–विभाजन	अंक	
1. पाण्डुलिपि विज्ञान	पाण्डुलिपि विज्ञान परिचय, पाण्डुलिपि विज्ञान की आवश्यकता एवं अध्ययन का महत्त्व, पाण्डुलिपि विज्ञान एवं अन्य सहायक विज्ञान, पाण्डुलिपियों के विविध प्रकार एवं उनकी विशेषताएँ, ताड़पत्र, भूर्जपत्र, साँची–पत्र, तूलीपत्र, ताम्रपत्र, स्वर्णपत्र, रजतपत्र, पटलेख, मृत्तिकालेख, स्तम्भलेख, गुहालेख, शिलालेख, चर्मपत्रलेख इत्यादि	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 टिप्पणी–शीर्षकों में से 02 पर टिप्पणी–लेखन। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
2. भारत में लेखन कला एवं ब्राह्मी लिपि	भारत में लेखन कला की प्राचीनता, ब्राह्मी लिपि का इतिहास एवं उत्पत्ति के सिद्धांत, गुप्तकालीन तथा अशोककालीन ब्राह्मी लिपि	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरा. प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 टिप्पणी–शीर्षकों में से 02 पर टिप्पणी–लेखन। 02 प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	

प्रभारी अकादमिक प्रथम

3. पाठालोचन	पाठालोचन की परिभाषा, उद्देश्य, आवश्यकता एवं सम्भावना, पाठालोचन प्रणालियाँ तथा पाण्डुलिपि संपादन एवं पाठालोचन में सम्बन्ध।	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरा0 प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 टिप्पणी–शीर्षकों में से 02 पर टिप्पणी–लेखन। 02 प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
4. शिलालेख	अशोक के अभिलेख, रुद्रदामन का गिरनार अभिलेख, कुमारगुप्त का मन्दसौर/दिशपुर अभिलेख, समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ प्रस्तराभिलेख,	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरा. प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 टिप्पणी–शीर्षकों में से 02 पर टिप्पणी–लेखन। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
भाग 'अ' में 01 प्रश्न (02–02 अंक के 08 लघूत्तरात्मक उपप्रश्न) अंक 16। भाग 'ब' में 64 अंक के 04 प्रश्न होंगे।				कुल =	80

पाठ्यक्रम के अधिगम हेतु सहायक पुस्तकें

क्र.	पुस्तक	व्याख्याकार	प्रकाशन	ISBN
1.	उत्कीर्ण लेखस्तबक	जियालाल काम्बोज	विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली	– – –
2.	उत्कीर्णलेखसंग्रह	कैलाशचंद्र शर्मा एवं संगीता शर्मा	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर	– – –
3.	सम्राट् अशोक के अभिलेख	विपश्यना	विशोधन विन्यास, धम्मागरि, इगतपुरी	– – –
4.	प्राचीन भारतीय अभिलेख संग्रह	श्रीराम गोयल	राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर	– – –
5.	प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख	परमेश्वरीलाल गुप्त	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	– – –
6.	प्राचीन भारतीय अभिलेख संग्रह	अवध किशोर नारायण एवं मणिशंकर शुक्ल	काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी	– – –
7.	अभिलेखमंजूषा	रणजीत सिंह सैनी	न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, दिल्ली	– – –
8.	पाण्डुलिपि विज्ञान	सत्येन्द्र	राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर	– – –
9.	प्राचीन भारतीय लिपि माला	गौरी शंकर हीराचंद ओझा	अजमेर	– – –
10	प्राचीन भारतीय अभिलेख	गोपाल यादव	कला प्रकाशन, वाराणसी	– – –
11	शिलालेखमाला	उमा शंकर शर्मा ऋषि	मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली	– – –
12	अभिलेखमाला	झा बन्धु	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी	– – –
13	अभिलेखांजलि	डॉ. भेषराज शर्मा	हंसा प्रकाशन, जयपुर	9789381954980

प्रभारी अकादमिक प्रधान

14	अभिलेखनिकरः	डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'	मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली	

Web Resources –

पाण्डुलिपि विज्ञान – **https://share.google/AhH1jLfcw2Ws5BWNf**

प्राचीन भारतीय लिपिमाला – **https://share.google/vpLxnTpArzmnW1nB3**

प्राचीन भारतीय अभिलेख – https://share.google/images/sFvUMgmZXa8TRnIE7

सम्राट अशोक के अभिलेख – https://share.google/PKXbqTgsTreNqVoio

स्नातकोत्तर–संस्कृत, प्रथम सेमेस्टर

Centric Core Elective Paper-V संस्कृत साहित्य का इतिहास

Course Code - SAN-[illegible] 10109-T

अधिगम–प्रतिफल

- विद्यार्थी ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद की संरचना, शाखाएँ, संहिताएँ, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् जैसे ग्रंथों के ऐतिहासिक विकास को समझ सकेंगे।
- वैदिक साहित्य के काल–निर्धारण, परम्परा और आचार्य–परम्परा के स्वरूप को समझ पाएँगे।
- वैदिक संस्कृत की विशेषताएँ, छंद, निघण्टु–निरुक्त परम्परा, और वैदिक शैलीगत विशिष्टताओं की पहचान कर सकेंगे।
- मंत्र, सूक्त, ब्राह्मणग्रन्थीय व्याख्याएँ और दार्शनिक सामग्री के प्रकार को समझ सकेंगे।
- धार्मिक आस्थाओं, यज्ञ–परम्परा, देवताओं के स्वरूप और आध्यात्मिक विचारधाराओं को ऐतिहासिक दृष्टि से समझ सकेंगे।
- वैदिक सूक्तों, ब्राह्मणों और उपनिषदों की आलोचनात्मक व्याख्या कर सकेंगे।
- वैदिक साहित्य का बाद के आर्ष, लौकिक, स्मार्त और पौराणिक साहित्य पर प्रभाव पहचान सकेंगे।
- वैदिकसंस्कृति, अध्यात्म, भाषायी विरासत और वैज्ञानिक चिंतन के प्रति सम्मान और समझ विकसित करेंगे।
- विद्यार्थी छात्र वेद–उपनिषद् के बाद विकसित काव्य, नाटक, गद्य, अलंकार, नीति, औषध, ज्योतिष, ऐतिहासिक साहित्य आदि की परम्परा और कालक्रम को समझ सकेंगे।

प्रभारी अकादमिक प्रथम

- कालिदास, भास, अश्वघोष, भवभूति, दण्डी, माघ, बाणभट्ट आदि प्रमुख रचनाकारों के साहित्यिक योगदान को समझ सकेंगे।
- छात्र महाकाव्य, खण्डकाव्य, रूपक, मुक्तक, कथा, चम्पू आदि काव्य–शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- लौकिक संस्कृत साहित्य के आधार पर समाज, राजनीति, धर्म, शिक्षा, दार्शनिक विचार, और सांस्कृतिक मूल्यों का ऐतिहासिक अध्ययन कर सकेंगे।
- कवियों, संरक्षकों (राजाओं) और साहित्य–विकास में राजदरबार, आश्रम, विश्वविद्यालयों की भूमिका को समझ सकेंगे।

कौशल प्रशिक्षण

- अनुवाद, टीका–संदर्भ, वैदिक सूक्त–संग्रह, शब्दसूची, अनुक्रमणिका आदि के स्रोत–उपयोग कौशल अर्जित कर सकेंगे।
- वैदिक साहित्य के इतिहास पर आधारित शोध–लेख, प्रोजेक्ट रिपोर्ट या प्रस्तुति तैयार कर सकेंगे।
- महाकाव्य, नाटक और गद्यग्रंथों के चयनित अंशों का अनुवाद, व्याख्या और टीका–निर्माण करने में सक्षम होंगे।
- संस्कृत साहित्य के इतिहास पर आधारित शोध लेख, प्रस्तुति, प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार कर सकेंगे।
- संस्कृत काव्य–शास्त्र, टीका–परम्परा, शब्दकोष, सूचीबद्ध ग्रंथों तथा डिजिटल संसाधनों का उपयोग कर सकेंगे।
- वैदिक तथा लौकिक संस्कृत ग्रंथों के मूल अंशों का सरल पठन, संधि–विच्छेद, व्याकरणीय पहचान कर सकेंगे।
- वैदिक एवं लौकिक ग्रंथों के चयनित अंशों का सटीक अनुवाद, व्याख्या और टिप्पणी तैयार कर सकेंगे।
- वैदिक तथा लौकिक साहित्य के आधार पर इतिहास, समाज, धर्म, दर्शन, परम्पराओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- ग्रंथों में निहित सांस्कृतिक अवधारणाओं को तथ्यात्मक साक्ष्यों के साथ व्याख्यायित कर पाएँगे।
- वैदिक व लौकिक साहित्य की भाषा, शैली, काव्य–परम्परा, विचार–प्रवाह की तुलना कर सकेंगे।
- विभिन्न शाखाओं, नाट्यकारों, कवियों व दार्शनिक परम्पराओं का तुलनात्मक अध्ययन करने में निपुण होंगे।
- साहित्यिक विषयों पर एकेडमिक प्रस्तुति, व्याख्यान एवं चर्चा बेहतर ढंग से प्रस्तुत कर सकेंगे।
- डिजिटल लाइब्रेरी, टेक्स्ट–कोर्पस, ऑनलाइन संस्कृत शब्दकोश, अभिलेख संग्रह आदि का तकनीकी उपयोग सीख सकेंगे।
- ग्रंथों का डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन और संदर्भ–व्यवस्थापन करने में सक्षम होंगे।
- भारतीय ज्ञान–परम्परा के मूल्यों के प्रति सांस्कृतिक संवेदनशीलता विकसित करेंगे।

प्रभारी अकादमिक प्रधान

पाठ्यक्रम की प्रकृति : मेजर
शिक्षण अवधि : 90 दिवस

प्रश्नपत्र प्रकृति : सैद्धान्तिक
प्रति सप्ताह कालांश : 04

पाठ्यक्रम क्रेडिट : 04
पूर्णांक : 100

नोट :– पूर्णांक का 20 प्रतिशत अंकभार मध्यावधि आन्तरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित है।

इकाई अनुसार पाठ्यक्रम

इकाई	पाठ्यांश	भाग	अंक–विभाजन	अंक	
1. वैदिक साहित्य	वैदिक साहित्य परिचय, वेदों का रचनाकाल, चारों वेदों का सामान्य परिचय, वेदों का प्रतिपाद्य विषय, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ, उपनिषद् एवं वेदांग साहित्य, पुराण एवं उपपुराणों का सामान्य परिचय, पुराणपंचलक्षण।	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरा. प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 टिप्पणी–शीर्षकों में से 02 पर टिप्पणी–लेखन। 02 प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
2. महाकाव्य,एवं नाट्यकाव्य	वीरकाव्य – रामायण एवं महाभारत दोनों का महत्त्व, परिचय, विषयवस्तु, परवर्ती साहित्य पर प्रभाव, दोनों ग्रन्थों का ऐतिहासिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व, महाकाव्य कवि – वाल्मीकि, अश्वघोष, कालिदास, भारवि, माघ, श्रीहर्ष का व्यक्तित्व एवं इन कवियों द्वारा विरचित महाकाव्यों का संक्षिप्त/सामान्य परिचय। नाट्यकाव्य कवि – भास, कालिदास, भवभूति, शूद्रक एवं विशाखदत्त का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्बन्धी प्रश्न।	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरा. प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 टिप्पणी–शीर्षकों में से 02 पर टिप्पणी–लेखन। 02 प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
3. नीतिकाव्य, गद्यकाव्य एवं कथा साहित्य	नीति कवि– भर्तृहरि, पं. विष्णु शर्मा एवं पं. नारायण पण्डित के व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्बन्धी प्रश्न। गद्यकाव्य प्रणेता – दण्डी, सुबन्धु, बाणभट्ट एवं अम्बिकादत्तव्यास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्बन्धी प्रश्न।	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरा0 प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 टिप्पणी–शीर्षकों में से 02 पर टिप्पणी–लेखन। 02 प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	

प्रभारी अकादमिक प्रभा.

4. आधुनिक संस्कृत साहित्य	**अ)आधुनिक संस्कृत महाकाव्य** – हरनामामृतम्, मोहभंगम्, जयवंशम्, लेनिनामृतम्, भीष्मचरितम्, मानवंशमहाकाव्यम् कच्छवंशमहाकाव्यम् के परिचय सम्बन्धी प्रश्न। **ब)आधुनिक संस्कृत गद्य साहित्य** – जीवनस्य पृष्ठद्वयम्, चन्द्रमहीपति, आदर्शरमणी, यात्राविलासम्, कुमुदिनीचन्द्र, इन्द्रविजयम् के परिचय सम्बन्धी प्रश्न। **स)आधुनिक संस्कृत कथा साहित्य** – कश्चित् कवि, संस्कृतकथाकुंजम्, उमा, प्रतिवेशिनी, आत्मवेदना के परिचय सम्बन्धी प्रश्न। **द)आधुनिकसंस्कृतकवि** – पं. मधुसूदन ओझा, भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, देवर्षि कलानाथ शास्त्री, नारायण शास्त्री कांकर, हरिराम आचार्य, प्रभाकर शास्त्री, सूर्यनारायण शास्त्री, पद्म शास्त्री, पं. नवलकिशोर कांकर, म.म. पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्बन्धी प्रश्न।	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूतरा. प्रश्न।	04	20
		'ब'	04 टिप्पणी–शीर्षकों में से 02 पर टिप्पणी–लेखन। 02 विवेचनात्मक प्रश्नों में से 01 समाधेय।	05+05 06	
				कुल =	80

भाग 'अ' में 01 प्रश्न (02–02 अंक के 08 लघूत्तरात्मक उपप्रश्न) अंक 16। भाग 'ब' में 64 अंक के 04 प्रश्न होंगे।

पाठ्यक्रम के अधिगम हेतु सहायक पुस्तकें

क्र.	पुस्तक	व्याख्याकार	प्रकाशन	ISBN
1.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	पुष्करदत्त शर्मा	अजमेरा बुक कम्पनी, जयपुर	— — —
2.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	डॉ. श्रीकृष्ण ओझा	अभिषेक प्रकाशन, जयपुर	— — —
3.	वैदिक साहित्य का इतिहास	श्यामलाल शर्मा	अभिषेक प्रकाशन, जयपुर	— — —
4.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	उमा शंकर शर्मा ऋषि	चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी	97889098729
5.	वैदिक साहित्य का इतिहास	राममूर्ति शर्मा	के.जी.के. कॉलेज, मुरादाबाद	— — —
6.	राजस्थानीय आधुनिक संस्कृत साहित्य	मधुबाला शर्मा	हंसा प्रकाशन, जयपुर	— — —
7.	वैदिक साहित्य एवं संस्कृति	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	— — —

...अकादमिक प्रथम

Web Resources –

संस्कृत साहित्य का इतिहास – https://share.google/images/Ib3ICE9HZ7OZdfib8

वैदिक साहित्य का इतिहास– https://ia601409.us.archive.org/8/items/in.ernet.dli.2015.477163/2015.477163.Vaidik-Saahitya.pdf

स्नातकोत्तर–संस्कृत, प्रथम सेमेस्टर

Skill Enhancement Course (SEC) Paper-VI संस्कृत रचना एवं अनुवाद

Course Code - SEC-10110-T

अधिगम–प्रतिफल

- विद्यार्थी संस्कृत वाक्य–विन्यास, शब्द–रूप, धातुरूप, समास, तद्धित–कृत प्रत्ययों का प्रयोग समझ सकेंगे।
- संस्कृत गद्य एवं पद्य की संरचना तथा शैलीगत भेदों को पहचान सकेंगे।
- संस्कृत से हिन्दी/हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद की मूलभूत प्रक्रियाएँ समझ सकेंगे।
- रचनानुवाद के लिए आवश्यक भाषिक, व्याकरणिक और संदर्भ–सम्बन्धी सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- संस्कृत के किसी भी वाक्य/अनुच्छेद का संदर्भानुकूल अर्थ निकाल सकेंगे।
- पद–विश्लेषण, संधि–विच्छेद, समास–विग्रह और अर्थ–व्याख्या में दक्ष हो सकेंगे।
- रचनानुवादकौमुदी के माध्यम से साहित्यिक शैली, भाषा–शुद्धता और प्रयोग–सौष्ठव का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- विभिन्न कथा, संवाद, वर्णनात्मक और निबंधात्मक संस्कृत–पैटर्न को समझकर नए वाक्य बना सकेंगे।
- डिजिटल ग्रंथों, ई–शब्दसूची और अनुवाद उपकरणों का शैक्षणिक उपयोग कर सकेंगे।

कौशल प्रशिक्षण

- संस्कृत से हिन्दी अथवा अंग्रेज़ी में सही, अर्थपूर्ण और प्रसंगानुकूल अनुवाद कर सकेंगे।
- हिन्दी वाक्यों को संस्कृत में व्याकरण–सम्मत एवं प्रवाहपूर्ण रूप में परिवर्तित कर सकेंगे।

प्रभारी अकादमिक प्रथम

- संधि, समास, कारक, विभक्ति, कालरूप, धातुप्रयोग आदि का व्यावहारिक प्रयोग सिद्ध हो सकेगा।
- जटिल संस्कृत वाक्यों को सरल, फिर पुनः जटिल संरचना में रूपांतरित करने का कौशल विकसित होगा।
- विद्यार्थी स्वयं संस्कृत में वाक्य–अनुच्छेद–संवाद–लघुकथा रचने एवं संस्कृत में शुद्ध अभिव्यक्ति का कौशल प्राप्त करेंगे।
- संस्कृत वाक्यों की भाषिक त्रुटियाँ पहचानकर संपादन एवं सुधार कर सकेंगे।
- पाठानुवाद में संदर्भ, भाव–सूत्र और मुख्य संदेश को पहचानने की क्षमता विकसित करेंगे।
- अनूदित सामग्री को प्रभावी रूप से समझाने व प्रस्तुत करने की क्षमता विकसित होगी।
- विद्यार्थी संस्कृत भाषा को व्यावहारिक, प्रयोगात्मक रूप में उपयोग करना सीखेंगे।
- भाषिक शुद्धता, संरचनात्मक दक्षता और भाषिक संवेदनशीलता विकसित करेंगे।
- प्रतियोगी परीक्षाओं, अध्यापन, अनुवाद कार्य तथा शोध–लेखन में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम की प्रकृति : मेजर	**प्रश्नपत्र प्रकृति** : सैद्धान्तिक	**पाठ्यक्रम क्रेडिट**	: 04
शिक्षण अवधि : 90 दिवस	**प्रति सप्ताह कालांश** : 04	**पूर्णांक**	: 100

नोट :– पूर्णांक का 20 प्रतिशत अंकभार मध्यावधि आन्तरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित है।

इकाई अनुसार पाठ्यक्रम

इकाई	पाठ्यांश	भाग	अंक–विभाजन	अंक	
1. गण	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी कृत रचनानुवादकौमुदी के अभ्यास सं. 21 से 30 तक में वर्णित पाठ्य आधारित अनुवाद	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	06 नियमों में से किन्हीं 03 की व्याख्या। 08 संस्कृतवाक्यों में से 05 का हिन्दी अनुवाद। 08 हिन्दीवाक्यों में से 05 का संस्कृत अनुवाद।	06 05 05	
2. कृदन्त एवं कारक विभक्ति	डॉ. कपिल देव द्विवेदी कृत रचनानुवादकौमुदी के अभ्यास सं. 31 से 45 तक में वर्णित पाठ्य आधारित अनुवाद	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	06 नियमों में से किन्हीं 03 की व्याख्या। 08 संस्कृतवाक्यों में से 05 का हिन्दी अनुवाद। 08 हिन्दीवाक्यों में से 05 का संस्कृत अनुवाद।	06 05 05	

प्रभारी अकादमिक प्रथम

3. समास	डॉ. कपिल देव द्विवेदी कृत रचनानुवादकौमुदी के अभ्यास सं. 46 से 51 तक में वर्णित पाठ्य आधारित अनुवाद	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	06 नियमों में से किन्हीं 03 की व्याख्या। 08 संस्कृतवाक्यों में से 05 का हिन्दी अनुवाद। 08 हिन्दीवाक्यों में से 05 का संस्कृत अनुवाद।	06 05 05	
4. तद्धित एवं स्त्रीप्रत्यय	डॉ. कपिल देव द्विवेदी कृत रचनानुवादकौमुदी के अभ्यास सं. 52 से 60 तक में वर्णित पाठ्य आधारित अनुवाद	'अ'	02–02 अंक के 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न।	04	20
		'ब'	06 नियमों में से किन्हीं 03 की व्याख्या। 08 संस्कृतवाक्यों में से 05 का हिन्दी अनुवाद। 08 हिन्दीवाक्यों में से 05 का संस्कृत अनुवाद।	06 05 05	
भाग 'अ' में 01 प्रश्न (02–02 अंक के 08 लघूत्तरात्मक उपप्रश्न) अंक 16। भाग 'ब' में 64 अंक के 04 प्रश्न होंगे।				**कुल =**	**80**

पाठ्यक्रम के अधिगम हेतु सहायक पुस्तकें

क्र.	पुस्तक	व्याख्याकार	प्रकाशन	ISBN
1.	रचनानुवादकौमुदी	डॉ. कपिल देव द्विवेदी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	– – –

Web Resources –

रचनानुवादकौमुदी – https://share.google/o7mIppzpAV5oxH1EJ

प्रभारी अकादमिक